श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, कोटड़ी-311603, तहसील कोटड़ी

यह मंदिर भीलवाड़ा से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर लोढ़ा परिवार कै द्वारा 200 वर्ष पूर्व बनाया गया है, ऐसा बताया गया। प्रतिमा प्राचीन है। समय (वि.स.) स्पष्ट नहीं है। इसलिए प्राचीनता का स्पष्ट आंकलन नहीं किया जा सकता। ग्राम प्राचीन है इसलिए मंदिर भी प्राचीन होना चाहिए। मंदिर प्राचीन होकर जीर्ण-शीर्ण हो रहा था-अतः जीर्णोद्वार कार्य चल रहा है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। संवत् भी अस्पष्ट है। सम्भवतयाः 1054 हो सकता है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण 5'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अनन्तनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1644 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है।

देवरी में काँच की जड़ाई की हुई है, अंदर चाँदी के फूल भी होना प्रतीत होता है।

बाहर :

माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस आलिए में भी टाइल्स जड़ी हुई है। इसके स्पष्ट है कि मंदिर प्राचीन है।

दूसरे आलिए तीन मालीपन्नायुक्त अधिष्ठायक देव की मूतियां स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा अनियमित व अनिश्चित है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सरदार सिंह जी व (9468655271) व श्री दिनेश जी भण्डारी (9772799416) द्वारा की जाती है।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर, नन्दराय-311601 तहसील कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 50 किमी , तहसील मुख्यालय से 20 किमी व बिगोद कस्बा से 10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह स्थानक परिसर के बीच स्थापित है। यह मंदिर करीब 250 वर्ष प्राचीन बताया गया है। पूर्व में प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। यदि प्रतिमा का आधार माने जाने से मंदिर 250 वर्ष प्राचीन प्रतीत होता है। कुछ समय पूर्व ही श्री निपुणरत्न विजय जी म.सा. द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया। मंदिर का श्री श्रेयासनाथ मंदिर ट्रस्ट बना हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1702 का लेख है।
2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 का लेख है।
3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 मिगसर कृष्णा 13 का लेख है।

गर्भगृह में काँच का जड़ाई की हुई है।

वेदी के नीचे की वेदी पर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। लाछण स्पष्ट नहीं है। लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री मनुजेश्वर यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री वस्तादेवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

दोनो आलियों में काँच का जड़ाई है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की प्रतिमा स्थापित है।

बाहर दोनो ओर आलियों में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री गौतम स्वामी की पीत पाषाण की प्रतिमा है।

सभामण्डप के गुम्बज के भीतर सभी तीर्थकरों के रंगीन चित्र व कलात्मक रंगीन स्तम्भ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मिगसर कृष्णा 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख वर्द्धमान श्रावक संघ की ओर से श्री जगवीरसिंह जी चौधरी (01482-224912) श्री भंवरसिंह जी लोढ़ा (01482-234508) एवं श्री अमरसिंह जी डुंगरवाल (मो. 94146 87053) द्वारा की जाती है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, माल का खेड़ा, तहसील कोटडी

यह मंदिर कोटड़ी से 10 किलोमीटर स्थित है।

यह चित्र सन् 1300 का उत्तराध्ययन सुखा बोध वृति के पाम पत्ती का है जिसे आगम अवतार पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया गया है।
बायें श्री पार्श्वनाथ भगवान एवं दाऐं में श्री आदिनाथ भगवान को मय रायण वृक्ष के दर्शाया गया है।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बनका खेड़ा-311011, तहसील कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 20 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर भीलवाड़ा से मांडलगढ़ जाने वाली सड़क पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन इसका आधार पर पूर्व में स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है। यह मंदिर पूर्व में श्री चंद्रप्रभ भगवान का था। पूर्व में मंदिर जीर्णशीर्ण होने से श्री मनोहर विजय जी म. सा. के उपदेश से जनसहयोग द्वारा जीणोद्वार कराया गया। प्रतिष्ठा होना शेष है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5'8 का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

5) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 श्रावण कृष्णा 5 का लेख है।

(6) श्री नमीनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर आलिए में :

1) षष्ठमुखी यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) विजया यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अधिष्ठायक देव 16'' व 5'' ऊँची प्रतिमा है।

ऊपर (प्रथम मंजिल) :

पूर्व की स्थापित प्रतिमा मूलनायक के रूप में कमरे में स्थापित की गई।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1863 का लेख है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है।

प्रतिष्ठा होना शेष है।

वार्षिक ध्वजा नही चढ़ती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री केसर सिंह जी चौधरी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 98292-52520

अजर-अव्याबाध
शुद्ध आत्मा को रोग नहीं होता, व्याधि और पीड़ा नहीं होती,
शुद्ध आत्मा को अखण्ड जवानी होती है।
संपूर्ण आरोग्य और अनंत आनंद होता है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, बड़ा महुवा-311011, तहसील कोटडी

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन होता बताया गया है। यह मंदिर यति जी द्वारा बनाया गया, यति द्वारा समाज को सुपुर्द कर दिया। बाद में जीर्णशीर्ण होने पर मंदिर रामलाल पिता काशीराम जी डांगी द्वारा बनाया गया और सं. 1940 फाल्गुन वदि को प्रतिष्ठा श्री चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई। यह डांगी परिवार के पारिवारिक वंशावली के आधार पर इसमें खारीवाल परिवार के सहयोग से प्रदान किया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1598 मिगसर सुदि 6 का लेख है।

2) श्री अनन्तनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1511 का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। अधिठाष्ता देव की प्रतिमा (प्राचीन) स्थापित है। मंदिर के बाहर दुकानें है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा अनियमित चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री पवन कुमार जी खारीवाल द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9828137540, श्री शान्तिलाल जी खारीवाल (01482-290030)

चक्षु की आवश्यकता है।

॥ परमात्मतत्त्वं प्रणमामि नित्यम् ॥
जवानी, आरोग्य और आनंद आत्मा के होते है, शरीर के नहीं।
रोग-शोक और संताप से मुक्त आत्मा को हमारी वंदना है।

श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, चंचलेश्वर-311605, तहसील कोटड़ी

यह शिखारबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 75 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर पारोली गांव से 6 किलोमीटर दूर बनास नदी के किनारे पर करीब 100 फीट ऊंचाई की पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर करीब 700 वर्ष प्राचीन है। ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में बनास भिणाय नगर का क्षेत्र सैंकड़ों किलोमीटर तक बनास नदी के किनारे फैला हुआ था। इस क्षेत्र की राजधानी भिणाय थी। ऐसी परम्परा थी जहां पर किसी राज्य की स्थापना होती वहां जैन लोग भी स्थापित हो जाते और जैनी लोग अपने पूजा-पाठ के लिये मंदिर की स्थापना करते थे। इसी परम्परा के अनुसार ऐसी दन्तकथा है कि यहां के श्री नाथू कावड़िया के पुण्य से एक जैन यति पधारें उन्होंने उपदेश दिया और वे स्वयं चाहते थे ऐसा धार्मिक कार्य करें जिससे यहां पर अति सुंदर शुद्ध व गहरी वाव बनाने का कार्य प्रशंसनीय है। जो आज भी उनको याद कराती है। कावड़िया-नाथू शाह वाव, दुर्ग भिणाय वाव आदि नामों से आज भी प्रचलित है। इस वाव की प्राचीनता करीब सात सौ वर्षों से प्राचीन है। अतः यह मंदिर 700 वर्ष प्राचीन है। नाथू ने वाव बनाने के पूर्व ही चंचलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बनवा दिया। आज भी यहां स्थापित दुर्ग (खण्डहर)- भिणाय का तालाब आदि से आज भी प्राचीनता प्रभावित होती है।

इस मंदिर का समय-समय पर जिर्णोद्धार होने का उल्लेख मिलता है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस मंदिर का जिर्णोद्धार कम ही हुआ है। संवत 1811 में श्री खुशालविजय जी म.सा. द्वारा रचित पार्श्वनाथ नाम माला था तीर्थावली में चंचलेश्वर पार्श्वनाथ का उल्लेख है।

मंदिर में स्थापित प्रतिमा बालू से निर्मित है। इसके लिए भी ऐसा कहा जाता है कि बनास नदी के पास

एक गाय प्रतिदिन आकर एक ही स्थान पर दूध छोड़ देती जिससे गाय–मालिक (गौ पालक) इससे परेशान था कि गाय का दूध कहां जाता है ? एक दिन गाय के पीछे–पीछे गया तो स्वयं ने गाय को दूध छोड़ते हुए देख कर आश्चर्यचकित हो गया।

इधर नाथू श्रावक ने स्वप्न में देखा कि अधिष्ठायक देवी ने संकेत दिया कि नदी में उस स्थान पर पार्श्व प्रभु की प्रतिमा है, निकाल कर चूल पर्वत पर मंदिर का निर्माण कर प्रतिष्ठा कर, संकेतिक स्थान पर प्रतिमा प्राप्त हुई। मंदिर का निर्माण कराया, प्रतिष्ठा कराई। इस कथा के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि नाथू कावड़िया, नाथू श्रावक व गौपालक एक ही व्यक्ति होगा क्योंकि प्राचीन काल में प्रायः श्रावकों के पास खेती होती थी, पशुपालन का कार्य भी करते थे। यह प्रतिमा चमत्कारिक है। ऐसी कई चमत्कारी घटनाएं सुनी जा सकती है।

चमत्कार के कारण ही श्वेताम्बर व दिगम्बर समाज दोनों ही भक्ति भाव रखते है। पूजा पाठ करते है। दोनों समाज के बीच विवाद चल रहा है। प्रतिमा पर विलेपन की आवश्यकता है तथा जिर्णोद्धार की आवश्यकता है। तलहटी पर भी पार्श्वनाथ का मंदिर स्थापित है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय अनुसार श्वेताम्बर समाज को भी श्वेताम्बर मूर्ति के पास एक मूर्ति दिगम्बर समाज ने भी स्थापित की है । वहां पर पूजा करते हैं ।

पहाड़ी पर मंदिर स्थापित होने के कारण वहां का गावं, प्राकृतिक सौंदर्य, मनमोहक है। यात्री के लिए विश्राम स्थल बने हुए है। कोई सुविधा नहीं है।

कई वर्षों से कोटड़ी जहाजपुर के श्वेताम्बर समाज के श्रावक व्यवस्था देखते रहे है। वर्तमान में दिगम्बर समाज द्वारा व्यवस्था देखता है। मंदिर की देखरेख के लिए एक पेढी है जो श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर के नाम से जानी जाती है। भगवान के जन्म कल्याणक के उपलक्ष पर पोष वदि 9 व 10 को मेला लगता हैं।

श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान मूर्ति पूजक संघ पेढ़ी, भीलवाड़ा-311001

सम्पर्क सूत्र-पी.पी.(श्वेता.)01482-224430(भीलवाड़ा)

श्री नेमिनाथ (श्री पार्श्वनाथ) भगवान का मंदिर पारोली, कोटड़ी-311202

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष से प्राचीन है। प्रतिमा मंदिर प्रथम मंजिल पर है। मंदिर के मुख्य दरवाजे पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर लिखा हुआ है और भूमि भी श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम से आंवटित है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का विजयानन्द सूरी जी का लेख है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1658 का लेख है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
4) समवसरण (चतुर्मुखी) 3'' ऊँची है। इस पर से. 1772 का लेख है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री धरणेन्द्र देव की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1658 का लेख है।

3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

देवी की गोद में बालक है, शेर पर सवार है। अतः अम्बिका देवी है।

एक जोड़ी चक्षु की आवश्यकता है।

मंदिर की 12 बीघा जमीन पार्श्वनाथ भगवान मंदिर के नाम से है व दुकाने स्थानक (उपाश्रय) है। परिक्रमा कक्ष नहीं है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री घीसूलाल जी गुगलिया द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 76659 45570

बाधाओं को देखकर विचलित न हों।
विश्वास रखें,
जीवन में निन्यावें द्वार बंद हो जाते हैं,
तब भी कोई-न-कोई एक द्वार जरूर खुला रहता है।

यह चित्र आत्माराम जी जैन जूना भण्डार बड़ोदरा में संवत् 1317 की है ।
यह चित्र कल्पसूत्र व कलकाकथा के ताण पत्ते पर बनाये गये हैं जिसमें छोटी आंख बनी है ।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर पारोली-311302, कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय 60 व तहसील मुख्यालय किलोमीटर से 30 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर 700 वर्ष पूर्व प्राचीन है। इसका आधार मंदिर की बनावट व प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है। मंदिर का विवाद श्वेताम्बर-दिगम्बर के बीच उच्चतम न्यायालय में विचाराधीन था, निर्णय होने पर दिगम्बर समाज को उसकी पूजा पद्धति के आधार पर स्वीकृति प्रातः 6 से 9 बजे तक प्रदान की है। चाबी श्वेताम्बर समाज के सदस्यों के पास रहती है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) हल्के हरे रंग की पाषाण की 51'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1335 का लेख है। प्रतिमा पर एक मुष्टि केश जो शेष रह गये वे स्पष्ट दिखाई देते हैं।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की(मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण 16'' ऊँची प्रतिमा है।

चक्षु नहीं है।

1) श्री आदिनाथ भगवान की उत्थापित धातु 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1536 का लेख है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। जिर्णोद्धार की आवश्यकता है ।

वार्षिक ध्वजा विवाद के कारण नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री घीसूलाल जी गुगलिया द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 7665945570

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर दांतड़ा-311603, तहसील कोटड़ी

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। भीलवाड़ा से कोटड़ी, कोटड़ी से दांतड़ा जाया जाता है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन है। मंदिर की बनावट इसका आधार है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है, जिसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

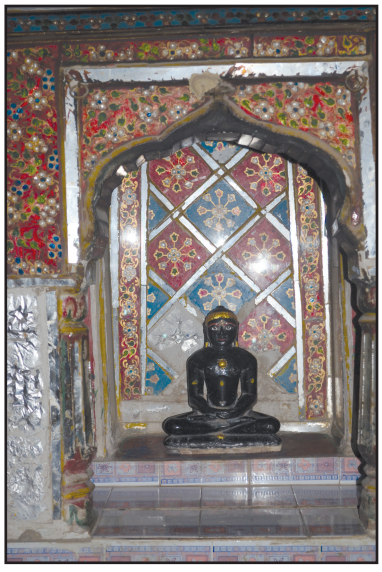

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछन भी स्पष्ट नहीं है। बोलचाल में पार्श्वनाथ बोला जाता है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। बाहर अधिष्ठायक देव की मूर्ति है।

मंदिर के नाम पर श्री अमरसिंह जी बंब ने 5 बीघा भूमि भेंट दी है लेकिन मंदिर के नाम पर हस्तान्तर नहीं हुई है।

प्रतिमा के पीछे टाइल्स लगी हुई है। दो वर्ष पूर्व समाज ने अपने स्तर पर जीणोद्धार कराया है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री दोलतसिंह जी व श्री अमरसिंह जी बंब द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9460352990

चक्षु की आवश्यकता है।

जिर्णोद्धार की आवश्यकता है ।